**International Journal of Advanced Education and Research**
**ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34**
**www.alleducationjournal.com**
**Volume 1; Issue 11; November 2016; Page No. 55-56**

# राष्ट्र कवि दिनकर के काव्य में राजनीतिक चेतना

**Birmati**

Extension Lecturer, Govt. College Julana, Jind, Haryana, India.

**सारांश**

राजनीति समाज का एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं। समाज के निर्माण और वयक्तित्व के उत्थान दोनों में राजतीति का योगदान होता है। साहित्यकार जिस समाज में जीता हैं, युग को जिस राजनीति में अपने व्यक्तित्व का विकास करता है, उसकी प्रतिच्दाया उसके साहित्य में परिलक्षित हो उठती है। युग के प्रति जागरूक और सामाजिक परिवेश का चितेरा कवि राजनीतिक परिस्थितियों के प्रभाव से अपने को मुक्त नहीं रख सकता, आधुनिक युग के कवि दिनकर ने तत्कालिन युग में प्रचलित सभी सामाजिक और राजनीतिक विचारधाराओं पर चिंतन–मनन किया हैं किन्तु अभिव्यक्ति केवल उन्हे ही दी हैं जिन्हे युग ने ग्रहण किया हैं, युग की जो राजनीतिक सामाजिक चेतना रही है, उन्हे तटस्थ भाव से अभिव्यक्त कर दिया है, दिनकर पर किसी वाद विशेषस का स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता हैं, समय पड़ने पर और आवश्यकता अनुभव करने पर वे उसी राजनीतिक धारा का खुलकर विरोध करते हैं, जिसे कभी उन्होने बड़ी श्रद्वा से सराहा था। दिनकर की राजनीतिक चेतना क्रांतिधर्मा युवकों को जेजस्विता देती हैं।

**प्रस्तावना**

1. ''साहित्य में यह नहीं होता कि कवि ने सड़क पर एक थप्पड़ खाया और घर में आकर वह उसकी कविता बनाने लगा। जिन घटनाओं से कवि का जीवन–दर्शन बदलता हैं, जो आदमी के देखने की दिशा बदल देती उसे कविता बनने के पूर्व कवि के रक्त में घुलने के लिए समय चाहिए''।

दिनकर का कवि व्यक्तित्व जिस काल में निर्मित होता हैं, उस काल की पृष्ठभूमि में जो नयी राजनीतिक चेतना उदबुद्व होती हैं, उसमें अनेक विचारकों ने नींव के पत्थर की तरह अपने विचारों का योगदान दिया। यह निर्विवाद हैं कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने बृहत राष्ट्रीय चेतना का विकास किया, इस आंदोलन ने तेजी से उभरते नव शिक्षित वर्ग में राष्ट्रीय गौरव व राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया। आशा–निराशा पूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों के बीच दिनकर का कवि अपना प्रभाव ग्रहण करता हैं और राजनीतिक चेतना को नव्य आयाम प्रदान करता हैं। दिनकर ने अपनी एक कविता में लिखा हैं।

''ऋण–शोधन के लिए दूध–घी बेच–बेच धन जोडेंगे बूंद–बूंद बेचेगे, अपने लिए नहीं कुछ छोडेंगे। शिशु मचलेंगे, दूध देख, जननी उनको बहलाएगी, मैं फाडूंगा ह्रदय, लाज से आंख नहीं रो पाएगी।

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी दिनकर जी के बारे में लिखते हैं– '' उसका मन व्यक्त रूप में मस्ती और मौज का उपासक हैं, शहर की चिंता में दुबले होने वालों से अलग रहना पसंद करता हैं किन्तु उसके भीतर अव्यक्त और अलक्षित रूप से सामाजिक चेतना का वेग हैं। इन द्विविध वृतियों के संधर्ष से दिनकर के काव्य में वह प्रवाह उत्पन्न हुआ हैं जो अन्य कवियों में नहीं मिलता''

3. अंग्रेज भारत जैसे देशों को गुलाम बनाकर अपने घृणित कृत्य को यह कहकर उचित ठहराते थे कि वे अधिक सभ्य हैं, इसलिए असभ्यों पर शासन करने का उनका सहज अधिकार हैं। दिनकर इसे अस्वीकर करते हैं और ताण्डव कविता में कहते हैं।

''गिरे विभव का दर्प चूर्ण हो,
लगे आग इस आडम्बर में,
स्वामिन, अंघड़–आग बुला दो
ज्ले पाप जग का क्षण–भर में

इन पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता हैं कि दिनकर की राजनीतिक चेतना में एक समतावादी समाजिक सांस्कृतिक दृष्टि लगातार सक्रिय है। दरिद्रजन निरीह निर्बल दल के प्रति पक्षधर का स्वर तीव्र हैं

दिनकर ने दिल्ली और मास्को कविता में कम्युनिस्टों से बहस करते हुए उन्हे अपनी प्राथमिकता दुरूस्त करने को कहा–

''ओ समता के वीर सिपाही
क्हो, सामने कौन अड़ी है?
बल से दिए पहाड देश की
छाती पर यह कौन खड़ी हैं?
यह है परतंत्रता देश की,
हुआ मनुज क्या प्रेय नहीं हैं ?
इसका मुक्ति–प्रयास स्वयं ही
क्या उज्ज्वलतम श्रेय नहीं है ?

दिनकर की राष्ट्रवादिता अंधी नहीं, वह गहराई से मानव–मुक्ति के मूल्य मे जुड़ी हैं, अपनी कविता किसको नमन करूं मैं ? में वे भारतीय राष्ट्र की कल्पना करते हुए उसे अत्यंत विस्तृत भावना में बदल देते हैं–

''भारत नहीं स्थान का वाचक,
गुण विशेष नर का हैं,
एक देश का नहीं, शील
यह भूमंडल भर का है।''

दिनकर की कविताओं का सम्बन्ध राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से भी हैं और इस संग्राम के साथ ऐतिहासिक एवं सामाजिक पहल भी जुड़े रहे हैं। भारति ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन था और साम्राज्यवाद दुनिया में आर्थिक–राजनीतिक विकास की एक विशिष्ट अवस्था का नाम हैं। अतः व्यापक सामाजिक परिवर्तन को लक्ष्य करके निखी गई कविताओं में इतिहास–दृष्टि का होना स्वाभाविक है, ऐसी कविताओं में इतिहास–दृष्टि की दिशा भविष्य की ओर निर्दिष्ट होती है। दिनकर असल में देश की राजनीतिक स्थिति ही नहीं, आम जनता यानि किसानो और मेहनतकशों के जीवन की हालत भी बदलना चाहते हैं। भले ही उनकी कविताओं में इस बडे बदलाव के लिए चले जन–संघर्ष या जन–आंदोलन का चित्रण नहीं मिलता, दिनकर की कविताओं में ऐसे बदलाव की भावना अवश्य अभिव्यक्त हुई हैं। दिनकर जिस युग में रचना करने को प्रेरित हुए उस युग की सबसे बड़ी विशेषता थी–'स्वतन्त्रता पाने के लिए युद्वा' स्वतंत्रता संग्राम की आवश्यकता है– युद्व में

आहुति देने के लिए तत्परता की इसी आवश्यकता का प्रभाव हैं कि दिनकर 'हिमालय' में कहते हैं –

''रे, रोक युधिष्ठिर को न यहां,
जने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर फिरा हम गाडी व– गदा,
लौटा दे अर्जुन–भम वीर''

राजनीतिक चेतना के लिहाज से दिनकर का कुरूक्षेत्र महत्वपूर्ण काव्य बन गया है क्योकि इस काव्य में सबसे बड़ा प्रश्न युद्व और शक्ति का हिंसा और अहिंसा का न्याय और अन्याय का मनुष्यता और बर्बरता का बन गया था और ऐतिहासिक रूप से देखते हैं तो उसके पहले और आज भी ये प्रश्न मनुष्य को समाज को परेशान कर रहे हैं। दिनकर जी नवजागरण के अग्रदूत के रूप में हिन्दी कविता में आते है। दिनकर की कविताओं में अपने पूर्ववर्ती मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा, नवीन की समस्त चेतना एक साथ साकार होती हैं। वे अतीत की उज्जवल परम्परा को मथते हैं, उनमें सांस्कृतिक परम्पराओं की गहरी सोच और समझ विघमान हैं, इसी कारण अनकी कविताए वर्तमान की पुकार से सचेत क्रांति का स्वागत करती हैं।

निष्कर्षता दिनकर भारतीय राजनीतिक चेतना की सस्वर वाणी हैं और अपने युग की समस्त अभिव्यक्ति भी राष्ट्रहित के लिए बांसुरी छोड़कर पांचजन्य उठाने का उनमे भरपूर साहंस था। उनकी राजनीतिक चेतना की पहचाल देश के स्थूल सुख–दुख और आक्रोश मात्र के चित्राण से नहीं, अपितु राष्ट्र की आत्मा की पहचान से हैं, जिसके मूल में भारतीय संस्कृति इतिहास के रूप में प्रेरणा और पृष्ठभूमि बनी है, तथा वर्तमान चेतना से स्पंदित होकर मुख्य जीवनधारा बन गई हैं। वास्तव में दिनकर क्रांतिदर्शी कवि थे। स्वतंत्रता से लेकर समतामूलक समाज की संस्थापना तक समग्र क्रांति की आवाज वो उठाते रहे। अपने को युगधर्म का हुहार कहने वाला कवि र्सनात्मक स्तर पर अपना युगबोध प्रसतुत करता हैं। स्वतंत्रतापूर्व से सवतंत्रता प्राप्ति के बाद तक वैचारिक फैलाव उनकी कृतियों में विद्यमान हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ


1. दिनकर स्मृति अंक– 'समर शेष हैं', संपादक–कन्हैयालाल फूलफगर
2. 'चक्रवाल' (रेणुका से)– दिनकर, पृष्ठ–12
3. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास – पं हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 251
4. 'रेणुका'– दिनकर, पृष्ठ–03
5. 'दिल्ली'– दिनकर, पृष्ठ– 19
6. नीलकुसुम– दिनकर, पृष्ठ–96
7. चक्रवाल (रेणुका)– दिनकर, पृष्ठ– 09